UP Board Class 6 Notes Hindi Chapter 1 चिर महान (मंजरी)

समस्त पद्यांशों की व्याख्या

जगजीवन ..... हित समान।

संदर्भ – यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "मंजरी' के 'चिर महान' नामकं पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कविवर सुमित्रानन्दन पन्त हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत कविता में भर्य, संशय, अन्धभक्ति से दूर रहकर मानवसेवा और भाईचारे की स्थापना पर बल दिया गया है। कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो, जिससे मैं लोक-कल्याण करके अपना जीवन सार्थक कर सकें।

व्याख्या – कवि ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे प्रभु! मैं उसका प्रेमी बनूं, जो समान रूप में मनुष्यमात्र को कल्याण करने वाला हो; संसाररूपी जीवन में जो दीर्घकाल तक रहने वाला हो; श्रेष्ठ सौंदर्य से परिपूर्ण और हृदय में सत्य धारण करने वाला हो।

जिससे जीवन में ..... अखिल व्यक्ति।

संदर्भ एवं प्रसंग – पूर्ववत् ।

व्याख्या – हे प्रभु! मैं वह प्रकाश बन सकें, जिसमें सम्पूर्ण प्राणी समाहित हो जाएँ, जिससे जीवन में शक्ति प्राप्त हो तथा भय, शक, संदेह एवं बिना सोच-विचार और अन्धविश्वास के किसी के प्रति निष्ठा रखने की भावना का निवारण हो सके।

पाकर प्रभु ..... विहान।

संदर्भ एवं प्रसंग – पूर्ववतु।

व्याख्या – हे प्रभु! तुझसे संसार के मनुष्यमात्र की पूर्ण रक्षा करने का अमरदान प्राप्त कर मैं कृतज्ञ हूँ। मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं एक बार पुनः नए जीवन का प्रातःकाल ला सकें, अर्थात् प्राणिमात्र को सुखी व समृद्ध बना सकें।

शब्दार्थ – जगजीवन = संसार के लोगों के जीवन में, चिर = दीर्घकाले तक रहने वाला, महान = बड़ा, संत्यप्राण = जिसका हृदय सत्य से भरा हो, मानव के हित समान = जो मानव का हितैषी हो, भय = डर, संशय = संदेह, अन्धभक्ति = बिना सोचे-समझे किसी के प्रति निष्ठा का भाव रखना, अखिल = सम्पूर्ण/सारा, मानव = मनुष्य, परित्राण = पूर्ण रक्षा, नव = नया, विहान = प्रातःकाल, भोर।

https://www.evidyarthi.in/